।। श्रीः ।।
चौखम्बा राष्ट्रभारती ग्रन्थमाला
11

संस्कृत-व्याकरण में कारकतत्त्वानुशीलन

(पाणिनितन्त्र के सन्दर्भ में)

लेखक
डॉ. उमाशङ्करशर्मा 'ऋषि'
प्रोफेसर : संस्कृत-विज्ञान
पटना विश्वविद्यालय, पटना

चौखम्बा सुरभारती प्रकाशन
वाराणसी

THE
CHAUKHAMBA RASHTRABHARATI GRANTHAMALA
11

SANSKRIT VYĀKARAṆA MAIN KĀRAKATATTVĀNUŚĪLANA

(A Critical Study of Karaka in Sanskrit Grammar of Panini System)

By
Dr. Umashankar Sharma 'Rishi'
Professor : Sanskrit Department,
Patna University, Patna

Chaukhamba Surbharati Prakashan
Varanasi

विषयानुक्रम

अध्याय पृष्ठ

१ कारक-विषयक भारतीय चिन्तन का इतिहास १–३४

दार्शनिक चिन्तन का ऋग्वेद में प्रारम्भ १, पाणिनि-पूर्व वैयाकरण ३, पाणिनि ४, कात्यायन ६, पतञ्जलि ७, कारक तथा विभक्ति का पृथक् निरूपण ८, भर्तृहरि के वाक्यपदीय में कारक-विचार ९, काशिकावृत्ति ११, बंगाल में पाणिनीय व्याकरण १३, प्रक्रिया-ग्रन्थों का उद्भव तथा विकास—प्रक्रिया-ग्रन्थ-स्वरूप १४, रूपावतार १४, रूपमाला १५, प्रक्रियाकौमुदी १५, भट्टोजिदीक्षित के ग्रन्थ १५, वैयाकरणभूषण १८, अन्नम्भट्ट १९, विश्वेश्वरसूरि २०, नागेशभट्ट के ग्रन्थ २०, लघुमञ्जूषा की विषयवस्तु २२, अन्य व्याकरण-सम्प्रदाय २३, दस सम्प्रदायों का संक्षिप्त इतिहास २४, अन्य शास्त्रों में कारक-चर्चा २९, अद्वैतवेदान्त ३०, शाबरभाष्य ३१, न्यायदर्शन : प्राचीन तथा नव्य ३२, कारकविषयक प्रकरण ग्रन्थ ३३।

२ क्रिया तथा कारक ३५–७०

कारकों का क्रिया से अन्वय ३५, क्रिया का स्वरूप : क्रिया, धातु तथा आख्यात ३५, फल तथा व्यापार के रूप में धातु का अर्थ ३६, निरुक्त में क्रिया का विचार ३७, क्रिया का 'करोति' या 'अस्ति' से अन्वय ३७, समन्वय ४०, वाक्यपदीय में क्रिया-विचार ४०, मण्डनमिश्र : फल की धात्वर्थता ४२, नागेश द्वारा इसकी आलोचना ४२, धात्वर्थ के एकांगी सिद्धान्त ४५, कर्तृवाच्य में व्यापार की प्रधानता ४६, कर्मवाच्य में फल की प्रधानता ४७, शाब्दबोध ४७, सकर्मक तथा अकर्मक धातु का अर्थ ४८, तिङ्प्रत्यय का अर्थ—न्याय तथा व्याकरण के सिद्धान्त ५१, वाक्य में क्रिया का स्थान ५४, नामार्थ का क्रिया से सम्बन्ध-कारक का बीज ५५, क्रिया की गम्यमानता से कारक की व्यवस्था ५६, कारक-लक्षण ५७, कारक की शक्तिरूपता (भर्तृहरि का मत) ५८, कारकलक्षण-विमर्श (अन्य लक्षणों पर विचार) ६२, कारकभेद तथा उनका युक्तिमूलक विकास ६६, सम्प्रदान तथा अपादान की कारकता ६७।

३ कारक तथा विभक्ति ७१–१००

कारक-सम्बन्ध तथा उपपद-सम्बन्ध ७१, विभक्ति तथा सुप् की पर्यायरूपता ७२, प्रथमादि विभक्तियों के दो रूप : कारकविभक्ति

पृष्ठ

अध्याय

तथा उपपदविभक्ति—प्रथमा ७३, द्वितीया ७४, तृतीया ७५, चतुर्थी ७६, पंचमी ७८, षष्ठी विभक्ति तथा शेष का अर्थ ८०, सप्तमी ८६, कारकविभक्ति का प्राबल्य ८८, सम्बोधन का अर्थ ९१, विवक्षातः कारकाणि ९५, विवक्षा का शास्त्रत्व तथा उसके प्रकार ९८, निषेध-वाक्यों में विभक्ति १००।

४ कर्तृ-कारक १०१–१४०

व्युत्पत्ति १०१, पाणिनि-कृत लक्षण १०१, 'स्वतन्त्र' का पतंजलि द्वारा विवेचन १०१, कर्ता की स्वतन्त्रता : भर्तृहरि के विचार १०४, प्रयोज्य का कर्तृत्व १०६, अचेतन का कर्तृत्व १०९, शब्द-जगत् की विलक्षणता ११०, 'अङ्कुरो जायते' में प्रकृति-विकृति का विवेचन १११, प्रकृति-विकृति का पर्याय से कर्तृत्व ११५, हेतु (प्रयोजक) का विचार ११८, नव्यन्याय में कर्तृ-विचार १२३, 'कृत्याश्रयः कर्ता'—भवानन्द १२५, गदाधर १२६, अचेतन का गौण कर्तृत्व—नव्य-व्याकरण तथा कर्तृत्व-लक्षण १२७, भट्टोजिदीक्षित, कौण्डभट्ट तथा नागेश का योगदान १२८, प्रयोजक और प्रयोज्य १३५, कर्ता के भेद १३७।

५ कर्म-कारक १४१-१९३

व्युत्पत्ति १४१, कर्ता का ईप्सिततम १४२, ईप्सिततम का पतञ्जलि द्वारा विवेचन १४४, अनीप्सित का कर्मत्व १४६, द्वेष्य तथा उदासीन १४७, न्यायदर्शन में कर्म-विवेचन १४९, जयन्तभट्ट की आपत्ति १५०, पुरुषोत्तम द्वारा समाधान १५०, मीमांसादर्शन में कर्म १५१, संस्कार्य-द्रव्य १५२, नव्य-न्याय में कर्मलक्षण तथा उनकी आलोचना १५२, नव्य-व्याकरण में कर्मलक्षण—दीक्षित, कौण्डभट्ट तथा नागेश द्वारा सभी मतों की समीक्षा १६३, द्विकर्मक धातु तथा अकथित कर्म १७१, द्विकर्मक धातुओं की सूची का विकास १७२, अकथित कर्म पर भर्तृहरि का वक्तव्य १७६, प्रयोज्य कर्ता का कर्मत्व १८१, कर्म के भेद १८५, निर्वर्त्य कर्म १८६, विकार्य कर्म १८७, प्राप्य कर्म १८९, कर्म के अन्य भेद १९१।

६ करण-कारक १९४–२२३

व्युत्पत्ति १९४, साधकतम कारक १९४, तमप्-प्रत्यय का अर्थ : पूर्वपक्ष तथा उत्तरपक्ष १९५, प्रकर्ष का अर्थ १९७, प्रकर्ष स्वकक्षा में या परापेक्षक १९९, कर्ता तथा करण में भेद २०१, कर्तृसंज्ञा द्वारा करणसंज्ञा का बाध २०३, विद्यमान करण द्वारा क्रियोपकार

अध्याय पृष्ठ

२०४, असत् पदार्थ का करणत्व २०४, नव्य-न्याय में करण-विवेचन : भवानन्द २०७, आत्मा का करणत्व २०९, व्युत्पत्तिवाद में कर्तृ-व्यापार की अधीनता २१०, कारण तथा करण में भेद २११, करण तथा हेतु २१३, हेतु तथा तादर्थ्य में भेद २१७, 'आश्रय' करण-तृतीया का अर्थ है—कौण्डभट्ट २१८, ब्रह्मसूत्र में करणत्व-विवक्षा २१८, नागेश द्वारा करणत्व-विवेचन २२०, करण के भेद २२२।

७ सम्प्रदान कारक २२४-२५८

व्युत्पत्ति २२४, पाणिनि-सूत्र का विश्लेषण २२४, 'कर्मणा', 'य··· सः' तथा 'अभिप्रेति' के निवेश का प्रयोजन २२४, क्रियासम्बन्ध से सम्प्रदान २२७, कर्म तथा सम्प्रदान : भेदाभेद-विवक्षा २२९, भर्तृहरि द्वारा विवेचन २३०, दानक्रिया तथा सम्प्रदान : अन्वर्थसंज्ञकता २३३, सम्प्रदान के भेद २३४, कुछ संशयात्मक उदाहरण २३७, नव्य-न्याय में सम्प्रदान-विवेचन : उद्देश्यत्व २४०, इच्छाविषयत्व २४१, नागेश द्वारा सम्प्रदानत्व-निर्वचन २४३, स्वत्वविचार २४६, सम्प्रदान के अन्य सूत्र : 'रुच्यर्थानां प्रीयमाणः' इत्यादि २४७।

८ अपादान-कारक २५९-२८८

व्युत्पत्ति २५९, पाणिनीय लक्षण २५९, ध्रुव की शास्त्रीयता : अवधि की अनिवार्यता २६०, अपाय तथा वैशेषिक दर्शन का विभाग-विवेचन २६४, अन्यतरकर्मज तथा उभयकर्मज विभागों में अपादान की स्थिति २६५, नागेश द्वारा अपादानत्व-निर्वचन २६६, नैयायिकों के विभागाश्रयत्व-मत का खण्डन २६९, अपादानविषयक अन्य स्थल २७१, अपादान के भेद २७४, अपादान-विषयक सूत्रों की व्याख्या का विकास-क्रम २७७, उपसंहार २८८।

९ अधिकरण-कारक २८९-३१४

अधि का प्राचीन अर्थ २८९, अधिकरण का अर्थ २९०, आधार की परम्परया अधिकरणता २९०, वाक्यपदीय में अधिकरण-लक्षण २९०, आकाश तथा काल का आधारत्व २९३, उपवास-क्रिया में आधार २९६, नव्यन्याय तथा अधिकरण : भवानन्द द्वारा विवेचन २९८, नव्यव्याकरण में अधिकरण-विचार : कौण्ड तथा नागेश ३०३, अधिकरण के भेद ३०६, अधिकरण के अन्य भेद ३१३।

परिशिष्ट

उपसंहार ३१५

सहायक ग्रन्थावली ३२०